हिन्दी (100 अंक)

MODEL PAPER – 1

समय : 3 घंटा 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

1. परीक्षार्थी OMR उत्तर-पत्रक पर अपना प्रश्न पुस्तिका क्रमांक (10 अंकों का) अवश्य लिखें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
3. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।
4. इस प्रश्न पत्र को धयानपूर्वक पढ़ने के लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया गया है।
5. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में है, खण्ड-अ एवं खण्ड-ब।
6. खण्ड-अ में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं, जिनमें से किन्हीं 50 प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है। 50 से अधिक प्रश्नों के उत्तर देने पर प्रथम 50 प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जायगा। प्रत्येक के लिए 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर उपलब्ध कराये गये OMR उत्तर-पत्रक में दिये गये सही विकल्प को नीले/काले बॉल पेन से प्रगाढ़ करें। किसी भी प्रकार के व्हाइटनर/तरल पदार्थ/ब्लेड/नाखून आदि का OMR उत्तर-पत्रक में प्रयोग करना मना है, अन्यथा परीक्षा परिणाम अमान्य होगा।
7. खण्ड-ब में कुल 6 विषयनिष्ठ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के समक्ष अंक निर्धारित हैं।
8. किसी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।

खण्ड-अ : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

❑ प्रश्न संख्या 1 से 100 तक के प्रत्येक वस्तुनिष्ठ प्रश्न के साथ चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें से कोई एक सही है। इन 100 प्रश्नों में से किन्हीं 50 प्रश्नों के अपने द्वारा चुने गये सही विकल्प को OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित करें। $50 \times 1 = 50$

1. 'उसने कहा था' कहानी में किस युद्ध का उल्लेख है ?
(A) प्रथम विश्वयुद्ध (B) द्वितीय विश्वयुद्ध
(C) कारगिल युद्ध (D) हल्दीघाटी युद्ध

2. 'कौमुदी' नामक कविता केन्द्र की स्थापना किसने की ?
(A) अशोक वाजपेयी (B) रघुवीर सहाय
(C) अज्ञेय (D) दिनकर

3. निम्नलिखित में से गद्य कविता कौन-सी है ?
(A) हार-जीत (B) उषा
(C) गाँव का घर (D) अधिनायक

4. 'ममेरा' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) रा (B) आ (C) एरा (D) मेरा

5. 'शिव' शब्द का पर्यायवाची शब्द क्या है ?
(A) रूद्र (B) हरि (C) शिवालय (D) रूद्राक्ष

6. 'हाथ का मैला होना' मुहावरे का अर्थ है :
(A) गंदा होना (B) कीमती होना
(C) सच होना (D) तुच्छ होना

7. मालती के बच्चे का नाम क्या है ?
(A) टिटी (B) सिटी (C) किटी (D) चिटी

8. 'स' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) तालु (B) दंत (C) ओष्ठ (D) कंठ

9. 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' कहाँ के लोगों में सर्वाधिक प्रचलित है ?
(A) भारत (B) यूरोप (C) अफ्रीका (D) कनाडा

10. 'गाँव का घर' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं ?
(A) ज्ञानेन्द्रपति (B) रघुवीर सहाय
(C) अशोक वाजपेयी (D) जयशंकर प्रसाद

11. 'सौ अजान एक सुजान' शीर्षक उपन्यास के लेखक कौन हैं ?
(A) रघुवीर सहाय (B) मोहन राकेश
(C) बालकृष्ण भट्ट (D) जयप्रकाश नारायण

12. ''बोलने से मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है''-यह किसने कहा है ?
(A) बेन जॉनसन (B) मार्क जॉनसन
(C) नील जॉनसन (D) लिन जॉनसन

13. 'बिशनी' कौन है ?
(A) मानक की बहन (B) मानक की भाभी
(C) मानक की चाची (D) मानक की माँ

14. 'लेखक' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है ?
(A) लेखनीय (B) लेखिका (C) रचयिता (D) लेखीका

15. 'अभिनेता' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या है ?
(A) नायिका (B) अभिनेत्री (C) सहनायिका (D) अभिनेताइन

16. 'पृथ्वी को धारण करने वाला'-के लिए एक शब्द क्या है ?
(A) आकाशपिण्ड (B) भूकम्प (C) पार्थिक (D) महीधर

17. 'मृग जैसे नेत्रें वाली' के लिए एक शब्द क्या है ?
(A) मृगनयन (B) मृगनयनी (C) नयनाभिराम (D) कमलनयन

18. 'अज्ञेय' का पूरा नाम क्या है ?
(A) सच्चिदानंद हीरानंद
(B) सच्चिदानंद हीरानंद वातास्यान
(C) सच्चिदानंद हीरानंद वाताशयन
(D) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

19. 'जिसका जन्म बाद में हुआ हो'-वह क्या कहलाता है ?
(A) अग्रज (B) कनिष्ठ (C) अनुज (D) ज्येष्ठ

20. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रशन (B) स्वर्ग (C) पुसतक (D) अनधेरा

21. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) बालमीकि (B) वाल्मीकी (C) वाल्मीकि (D) बाल्मीकी

22. 'जिससे किसी बात के न होने का बोध हो'-उसे क्या कहते हैं ?
(A) निषेधवाचक (B) विधिवाचक
(C) आज्ञावाचक (D) संदेहवाचक

23. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रधानाचार्य (B) प्रधानाचर्य
(C) प्रधानचार्य (D) परधानाचार्य

24. निम्न में से शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) प्रियदरशी (B) प्रियदर्सी (C) प्रियेदर्शी (D) प्रियदर्शी

25. निम्न में शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) विकल्प (B) विकलप (C) वीकल्प (D) बिकल्प

26. 'किसी काम में दखल देना'-क्या कहलाता है ?
(A) हस्तक्षेप (B) कर्मशील (C) कर्महीन (D) दखलकार्य

27. 'जानने की इच्छा रखने वाला'-क्या कहलाता है ?
(A) जिज्ञासा (B) जिज्ञासु (C) जिजीविषा (D) जानकार

28. 'वन में चरने वाला' क्या कहलाता है ?
(A) जीव (B) जानवर (C) वनचर (D) बनचर

29. 'गुण-दोष विवेचक' क्या कहलाता है ?
(A) विवेचक (B) आलोचक
(C) निन्दक (D) गुण-दोष रहित

30. 'अज्ञेय' का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1911 ई॰ (B) 2011 ई॰ (C) 1811 ई॰ (D) 1850 ई॰

31. नामवर सिंह का जन्म कब हुआ था ?
(A) 1927 ई॰ (B) 1827 ई॰ (C) 1727 ई॰ (D) 1627 ई॰

32. निम्न में से 'प्रेम के पीर' के कवि कौन हैं ?
(A) तुलसीदास (B) सूरदास (C) जायसी (D) कबीरदास

33. निम्न में से कौन राष्ट्रकवि' हैं ?
(A) नागार्जुन (B) विद्यापति (C) दिनकर (D) बिहारीलाल

34. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की नजर में बालकृष्ण भट्ट क्या थे ?
(A) साहित्य के एडीसन (B) लोकनायक
(C) विश्वशिक्षक (D) भाषा के डिक्टेटर

35. निम्न में से 'लोक नायक' शब्द किनके लिए प्रयोग किया जाता है ?
(A) प्रेमचंद (B) जयप्रकाश नारायण
(C) नागार्जुन (D) फणीश्वरनाथ 'रेणु'

36. निम्न में से 'ब्रजराज कुँवर' कौन हैं ?
(A) राम (B) बलराम (C) कृष्ण (D) नन्द

37. 'सूरसागर' के रचनाकार कौन हैं ?
(A) तुलसीदास (B) सूरदास (C) कबीरदास (D) जायसी

38. 'कड़बक' में कौन बात पायी जाती है ?
(A) प्रेम की महिमा (B) ईश्वर की महिमा
(C) मानव की महिमा (D) दानव की महिमा

39. नामवर सिंह के गुरू कौन थे ?
(A) हजारी प्रसाद द्विवेदी (B) रामचन्द्र शुल्क
(C) रामविलास शर्मा (D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

40. 'कामायनी' के रचयिता कौन हैं ?
(A) जयशंकर प्रसाद (B) नागार्जुन
(C) निराला (D) महादेवी वर्मा

41. 'हँसते हुए मेरा अकेलापन' हिन्दी साहित्य की कौन विधा है ?
(A) डायरी (B) यात्रा-वृत्तान्त
(C) आत्मकथा (D) शब्द-चित्र

42. निम्न में से गद्य कविता कौन है ?
(A) अधिनायक (B) हार-जीत
(C) गाँव का घर (D) प्यारे नन्हें बेटे को

43. 'भूषण' किस रस के महान कवि हैं ?
(A) श्रृंगार रस (B) हास्य रस
(C) वीर रस (D) वीभत्स रस

44. 'ओ सदानीरा' निबंध किस नदी को आधार बनाकर लिखा गया है ?
(A) गंगा नदी (B) यमुना नदी
(C) कोसी नदी (D) गंडक नदी

45. 'जायसी' किस काल-खंड के कवि हैं ?
(A) आदिकाल (B) भक्तिकाल
(C) रीतिकाल (D) आधुनिक काल

46. संत तुलसीदास कैसे कवि हैं ?
(A) समन्वयवादी (B) रहस्यवादी
(C) पृथक्तावादी (D) छायावादी

47. किस कहानी का शीर्षक 'गैंग्रीन' था ?
(A) उसने कहा था (B) रोज
(C) रस्सी का टुकड़ा (D) तिरिछ

48. ''नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं।''-किस पठित पाठ की उक्ति है ?
(A) ओ सदानीरा (B) सिपाही की माँ
(C) शिक्षा (D) अर्धनारीश्वर

49. जे॰ कृष्णमूर्ति की रचना कैसी है ?
(A) अर्थशास्त्र (B) तर्कशास्त्र
(C) शिक्षा शास्त्र (D) चिकित्सा शास्त्र

50. 'जूठन' क्या है ?
(A) आत्मकथा (B) आलोचना (C) एकांकी (D) कहानी

51. 'ईद का चाँद होना' मुहावरे का अर्थ क्या होगा ?
(A) बहुत दिनों पर दिखना (B) नहीं आना
(C) गायब हो जाना (D) परेशान होना

52. 'अंधे की लकड़ी' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) एकमात्र सहारा (B) कमजोर होना
(C) असहाय होना (D) लकड़ी के सहारे चलना

53. 'अधजल गगरी छलकत जाए' लोकोक्ति का अर्थ क्या होगा ?
(A) आवश्यकता से अधिक प्रदर्शन करना
(B) गगरी भरी होना
(C) प्रदर्शन न करना
(D) गगरी खाली होना

54. 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' लोकोक्ति का अर्थ क्या है ?
(A) बहाना करना (B) नर्तकी
(C) बयानबाजी करना (D) नृत्य करना

55. 'तीन तेरह होना' मुहावरे का अर्थ क्या होगा ?
(A) तितर-बितर होना (B) संकट आ जाना
(C) परेशान होना (D) दस तीन तेरह

56. 'हीरा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) द्रव्यवाचक (B) जातिवाचक
(C) समूहवाचक (D) भाववाचक

57. 'बुढ़ापा' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) भाववाचक (B) व्यक्तिवाचक
(C) जातिवाचक (D) द्रव्यवाचक

58. 'गंगा' शब्द का पर्यायवाची क्या होगा ?
(A) मंदाकिनी (B) महाकाय
(C) अनंत (D) सागर

59. 'नायक' शब्द का संधि-विच्छेद क्या होगा ?
(A) नै + अक (B) ने + अक
(C) नि: + अक (D) ना + यक

60. 'आत्मा' शब्द क्या है ?
(A) स्त्रीलिंग (B) उभयलिंग
(C) पुल्लिग (D) इनमें से कोई नहीं

61. 'प्रतिनिधि' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) प्रति (B) प्रत (C) घि (D) प्रतिनी

62. 'पढ़ाई' शब्द में प्रत्यय क्या है ?
(A) आई (B) ढ़ाई (C) ढ़ाइ (D) अई

63. 'पुरस्कार' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) दण्ड (B) सम्मान (C) पारिश्रमिक (D) अपमान

64. 'त्रिदेव' शब्द कौन समास है ?
(A) तत्पुरुष (B) द्विगु (C) कर्मधारय (D) द्वन्द्व

65. 'अपमान' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) अपमानी (B) अपमानित
(C) अपमानकारी (D) अपमानहीन

66. 'रोमांच' शब्द का विशेषण क्या होगा ?
(A) रोमांचित (B) रोमांचकारी
(C) रोमांचशील (D) रोमांचणीय

67. 'सर्वनाम' के कितने भेद होते हैं ?
(A) तीन (B) पाँच (C) छः (D) आठ

68. 'वर्तमान काल' के कितने भेद होते हैं ?
(A) पाँच (B) आठ (C) तीन (D) दस

69. 'प' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) तालु (B) ओष्ठ (C) दंत (D) कंठ

70. 'ण' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) मूर्द्धा (B) तालु (C) कंठ (D) दंत

71. 'जो बहुत बोलता है'-के लिए एक शब्द है :
(A) वागीश (B) वाचाल (C) वाचस्पति (D) गुणवान

72. निम्न में से शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) आस्तिक (B) नास्तीक (C) घिंणा (D) पराजीत

73. 'चुटकी लेना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) हँसी उड़ाना (B) नीच समझना
(C) संकेत करना (D) दुखी करना

74. 'स्वदेश' शब्द का विलोम क्या है ?
(A) देशीय (B) देश (C) परदेश (D) राष्ट्र

75. 'कविश्रेष्ठ' शब्द कौन समास है ?
(A) तत्पुरुष (B) द्विगु
(C) कर्मधारय (D) अव्ययीभाव

76. 'हताहत' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?
(A) हत + हत (B) हता + हत
(C) हत + आहत (D) हताह + त

77. 'निराहार' शब्द में उपसर्ग क्या है ?
(A) निः (B) निराह (C) निर (D) निर्

78. 'देश पर मर-मिटने वाले लोग' कौन पदबंध है ?
(A) विशेषण पदबंध (B) संज्ञा पदबंध
(C) क्रिया पदबंध (D) सर्वनाम पदबंध

79. 'यह नया माल है' इस वाक्य में 'नया' शब्द है :
(A) संज्ञा (B) सर्वनाम (C) विशेषण (D) क्रिया

80. कुछ खा लो'-किस सर्वनाम का उदाहरण है ?
(A) निश्चयवाचक (B) अनिश्चयवाचक
(C) प्रश्नवाचक (D) निजवाचक

81. 'दुस्साहस' शब्द का संधि-विच्छेद क्या है ?
(A) दुः + साहस (B) दुस + साहस
(C) दुर + साहस (D) दुस्सा + हस

82. 'दुर्बल' शब्द का उपसर्ग क्या है ?
(A) दब (B) दुर (C) दबा (D) दुब

83. हिन्दी में पदबंध के कितने भेद है ?
(A) पाँच (B) दस (C) तीन (D) छः

84. 'पुराण' शब्द का विशेषण है :
(A) पौराणिक (B) धार्मिक (C) पुराणीक (D) पुराना

85. 'हे भगवान ! इस गरीब की रक्षा कर' किस कारक का उदाहरण है ?
(A) कर्त्ता (B) संबोधन (C) संप्रदान (D) अधिकरण

86. 'सभा' शब्द क्या है ?
(A) स्त्रीलिंग (B) पुंलिंग
(C) उभयलिंग (D) इनमें से कोई नहीं

87. 'भारतवर्ष' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) जातिवाचक (B) भाववाचक
(C) समूहवाचक (D) व्यक्तिवाचक

88. 'बादल घिरे और मयूर नाचने लगे'-कौन वाक्य है ?
(A) सरल वाक्य (B) मिश्र वाक्य
(C) संयुक्त वाक्य (D) इनमें से कोई नहीं

89. 'जिसने यश प्राप्त किया है'-के लिए एक शब्द क्या होगा ?
(A) यशस्वी (B) तेजस्वी
(C) यशवान् (D) गुणवान

90. 'दिल छोटा करना' मुहावरे का अर्थ क्या है ?
(A) कृपण होना (B) संतप्त होना
(C) हतोत्साहित होना (D) प्रसन्न होना

91. 'कौआ पेड़ पर बैठा है'-किस कारक का उदाहरण है ?
(A) अधिकरण (B) संबोधन (C) कर्त्ता (D) कर्म

92. 'नायक' शब्द का स्त्रीलिंग रूप क्या होगा ?
(A) नायिका (B) नायकी
(C) नायाकी (D) इनमें से कोई नहीं

93. 'कृपणता' शब्द कौन संज्ञा है ?
(A) व्यक्तिवाचक (B) भाववाचक
(C) समूहवाचक (D) जातिवाचक

94. ऐसी संज्ञाएँ जिनके खंड सार्थक होते हैं, उन्हें क्या कहते हैं ?
(A) रूढ़ (B) यौगिक
(C) योगरूढ़ (D) इनमें से कोई नहीं

95. 'ब' का उच्चारण-स्थान क्या है ?
(A) तालु (B) कंठ (C) ओष्ठ (D) दंत

96. निम्न में से शुद्ध शब्द कौन है ?
(A) वाल्मीकि (B) अभीनेत्री
(C) संवीधान (D) साहीत्य

97. 'आँखों का तारा होना' मुहावरे का अर्थ है :
(A) प्रिय होना (B) अप्रिय होना
(C) मित्र होना (D) शत्रु होना

98. 'जो पुरुष अभिनय करे'-के लिए एक शब्द क्या होगा ?
(A) लेखक (B) अभिनेता
(C) राजनेता (D) नर्त्तक

99. 'खण्डन' शब्द का विलोम क्या होगा ?
(A) टुकड़े करना (B) तोड़ना
(C) मण्डन (D) खण्डित करना

100. 'आजन्म' शब्द कौन समास है ?
(A) अव्ययीभाव (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व (D) द्विगु

खण्ड-ब : विषयनिष्ठ प्रश्न

1. किसी एक पर निबंध लिखें— 1 × 8 = 8
(i) बेरोजगारी और युवा वर्ग (ii) मेरी प्रिय पुस्तक
(iii) महँगाई–एक समस्या (iv) भ्रष्टाचार
(v) साम्प्रदायिकता (vi) सह-शिक्षा

2. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें— 2 × 4 = 8
(क) कैसी है चम्पारण की यह भूमि ? मानों विस्मृति के हाथों अपनी बड़ी-से-बड़ी निधियों को सौंपने के लिए प्रस्तुत करती है।
(ख) यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं, चलती है, पर मीठी छूरी की तरह महीन मार करती हुई।

(ग) दीन, सब अंगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाई।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी दास कहाइ।।

(घ) पवन की प्राचीर में रूक,
जला जीवन जा रहा झुक
इस झुलसते विश्व-तन की,
मैं कुसुम ऋतु रात रे मन!

3. अपने क्षेत्र में मच्छरों के प्रकोप का वर्णन करते हुए उचित कार्यवाई के लिए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखें। 5

अथवा,

गत कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बढ़ने लगे हैं। उनकी रोकथाम के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

4. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं पाँचों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें। $2 \times 5 = 10$

(i) 'उसने कहा था' कहानी का केन्द्रीय भाव क्या है ? वर्णन करें।
(ii) जीवन में विद्रोह का क्या स्थान है?
(iii) डायरी क्या है ?
(iv) 'कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बाने आये हो।' वजीरा के इस कथन में किसकी ओर संकेत हैं ?
(v) बुद्ध ने आनन्द से क्या कहा था ?
(vi) चौर और मन किसे कहते हैं?
(vii) पुत्र के लिए माँ क्या-क्या करती है?
(viii) दानव दुरात्मा से क्या अभिप्राय है?
(ix) 'ध्रुवस्वामिनी' के रचनाकार कौन है?
(x) 'अखरावट' के रचयिता कौन है?

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें। $3 \times 5 = 15$

(i) 'शिक्षा' शीर्षक संभाषण का सारांश अपने शब्दों में लिखें।
(ii) 'ओ सदानीरा' निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखें।
(iii) चर्चित कवि शमशेर बहादुर सिंह की जीवनी और उनके द्वारा रचित कविता 'उषा' का सारांश लिखें।
(iv) कविवर ज्ञानेंद्रपति की जीवनी तथा उनके द्वारा लिखित कविता 'गाँव का घर' का सारांश लिखें।
(v) विद्यालय में लेखक के साथ कैसी घटनाएँ घटती हैं ?
(vi) भारत का राष्ट्रगान 'जन-गन-मन अधिनायक जय हे' से अधिनायक का क्या संबंध ठहरता है ? वर्णन करें।

6. निम्न में से किसी एक का संक्षेपण करें $1 \times 4 = 4$

(i) युवा वर्ग का मस्तिष्क नई-नई बातों की ओर तेज दौड़ता है। उसमें अन्य वर्ग के व्यक्तियों से अधिक आवेश और शक्ति होती है। इस अवस्था में यदि सही शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिले तो यही शक्ति और प्रेरणा निर्माण के स्थान पर विनाश की ओर ले जाती है। बिगड़ने और बनने की भी यही आयु होती है। दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा-पद्धति केवल उपाधि बाँटने का काम ही करती है. एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य बनाना आज की शिक्षा-पद्धति के लिए मुश्किल है।

(ii) प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उद्देश्य होना चाहिए। यदि तुम्हारा कोई उद्देश्य नहीं है, तो तुम सफल न होगे। इसको तुम्हें जानना आवश्यक है। उद्देश्यहीन मनुष्य बिना पतवार की नाव की तरह है। विभिन्न मनुष्यों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। बहुत लोग धन कमाना चाहते हैं और धन कमाना ही उनका उद्देश्य बन जाता है। कुछ लोग केवल आनन्द उठाना चाहते हैं। कुछ लोग विद्या के लिए परेशान हैं। कुछ लोग सिर्फ बड़ाई चाहते हैं। तुम्हारा उद्देश्य देश की सेवा करना होना चाहिए। तुम्हारा देश दरिद्र है। यहाँ किसान सच्चे, सरल और पवित्र हैं। वे भूमि को अच्छा बनाकर अपनी मेहनत की अच्छी मजदूरी नहीं निकाल सकते हैं। तुम उन्हें योग्य और सफल किसान बनाने का उद्योग कर सकते हो।

व्याख्यासहित उत्तर

खण्ड 'अ'

OMR ANSWER-SHEET

1.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	51.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
2.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	52.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
3.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	53.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
4.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	54.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
5.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	55.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
6.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	56.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
7.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	57.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
8.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	58.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
9.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	59.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
10.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	60.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
11.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	61.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
12.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	62.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
13.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	63.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
14.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	64.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
15.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	65.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
16.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	66.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
17.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	67.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
18.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	68.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
19.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	69.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
20.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	70.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
21.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	71.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
22.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	72.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
23.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	73.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
24.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	74.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
25.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	75.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
26.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	76.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
27.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	77.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
28.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	78.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
29.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	79.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
30.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	80.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
31.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	81.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
32.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	82.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
33.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	83.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
34.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	84.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
35.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	85.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
36.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	86.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
37.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	87.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
38.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	88.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
39.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	89.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
40.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	90.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
41.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	91.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
42.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	92.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
43.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	93.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
44.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	94.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
45.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	95.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
46.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	96.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
47.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	97.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
48.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	98.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
49.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	99.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ
50.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ	100.	Ⓐ	Ⓑ	Ⓒ	Ⓓ

ANSWER

1. (A)	2. (B)	3. (A)	4. (C)	5. (A)
6. (D)	7. (A)	8. (B)	9. (B)	10. (A)
11. (C)	12. (A)	13. (D)	14. (B)	15. (B)
16. (A)	17. (B)	18. (D)	19. (C)	20. (B)
21. (C)	22. (A)	23. (A)	24. (D)	25. (A)
26. (A)	27. (B)	28. (C)	29. (B)	30. (A)
31. (A)	32. (C)	33. (C)	34. (A)	35. (B)
36. (C)	37. (B)	38. (A)	39. (A)	40. (A)
41. (A)	42. (B)	43. (C)	44. (D)	45. (B)
46. (D)	47. (B)	48. (D)	49. (C)	50. (A)
51. (A)	52. (A)	53. (A)	54. (A)	55. (A)
56. (A)	57. (A)	58. (A)	59. (A)	60. (A)
61. (A)	62. (A)	63. (A)	64. (B)	65. (B)
66. (A)	67. (C)	68. (C)	69. (B)	70. (B)
71. (B)	72. (A)	73. (A)	74. (C)	75. (A)
76. (C)	77. (D)	78. (B)	79. (C)	80. (B)
81. (A)	82. (B)	83. (A)	84. (A)	85. (B)
86. (A)	87. (D)	88. (C)	89. (A)	90. (C)
91. (A)	92. (A)	93. (B)	94. (B)	95. (C)
96. (A)	97. (A)	98. (B)	99. (C)	100. (A)

खण्ड – ब

1. (i) बेरोजगारी और युवा वर्ग

किसी भी देश के लिए बेरोजगारी एक भयंकर समस्या है। रोजगार व्यक्ति जहाँ समाज में उत्पादन वृद्धि में योगदान करता है वहीं बेरोजगार व्यक्ति अर्थ-व्यवस्था पर बोझ बन जाता है। बेरोजगारी का सबसे बुरा पक्ष सामाजिक है। बेरोजगारी मनुष्य के आत्मविश्वास को खत्म कर उसमें हीनता को जन्म देती है। इस प्रकार मनुष्य निराशावादी हो जाता है और उसके मन में समाज के प्रति आक्रोश उत्पन्न होने लगता है। बाद में यही आक्रोश उसके सामाजिक असंतोष का कारण बनता है।

बेरोजगारी के कारण जब किसी व्यक्ति के समक्ष भूखों मरने की नौबत आ जाती है तो वह व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। देश में लूटपाट, चोरी, डकैती, हत्या, फिरौती के लिए अपहरण जैसे अपराधों में बढ़ोत्तरी बेरोजगारी के कारण ही हो रहा है। यही नहीं बेरोजगारी के कारण ही लोग भिक्षावृति एवं वैश्यावृति जैसी अमानवीय वृति को अपनाने के लिए मजबूर हो रहे हैं। हमारे देश में बेरोजगारी में विस्फोटक ढंग से वृद्धि हुई है। वर्ष 1951 में देशभर में बेरोजगारों की संख्या 33 लाख थी। वर्ष 1961 में बढ़कर यह 9० लाख हो गयी। इस तरह देश में बेरोजगारों की संख्यों में लगातार वृद्धि हो रही है और अब इनकी संख्या 25 करोड़ से भी अधिक है। बेरोजगारी बढ़ने का सबसे बड़ा कारण उत्पादन का केन्द्रीयकरण ढाँचा है। यही केन्द्रीयकरण ढाँचा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के फलने-फूलने का सबसे मजबूत आधार है।

(ii) मेरा प्रिय खेल

क्रिकेट का खेल संसार में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित है। यह इतना लोकप्रिय है कि हर स्थिति और उम्र के लोग इसके बारे में जानते हैं। वे उत्सुकता से क्रिकेट मैच की प्रतीक्षा करते हैं। फाइनल मैच के दिन बाजार की अधिकांश दुकानें बंद रहती हैं। कार्यालय के कर्मचारी अपने टेलीविजन-सेट पर मैच देखने के लिए आकस्मिक अवकाश का आवेदन-पत्र दे देते हैं। क्रिकेट का टेस्ट मैच पाँच दिनों तक खेला जाता है। एकदिवसीय मैच सिर्फ एक दिन में समाप्त हो जाता है।

मैंने हाल में टेलीविजन पर एक क्रिकेट टेस्ट मैच देखा जो कलकत्ता में भारत और इंगलैण्ड के बीच खेला गया था। ईडन गार्डन का वह मैदान जहाँ मैच खेला गया, पूरी तरह भरा हुआ था। मैच सुबह 9.5० पर शुरू हुआ। भारत के कप्तान सुनील गावस्कर तथा इंग्लैण्ड के कप्तान कीथ फ्लैचर थे।

मैच इंगलैण्ड की बैटिंग से शुरू हुआ। इंगलैण्ड का शुरूआती बल्लेबाज काफी मजबूत था। लेकिन विकेट गिरते रहे और इंगलैण्ड का टीम एक छोटे से योग पर ही पहली पारी में आउट हो गयी। भारतीय खिलाड़ी अच्छा खेले। उन्होंने बैटिंग भी अच्छी की और एक अच्छे योग तक अपनी रन संख्या को पहुँचाया।

खेल के चौथे दिन इंगलैण्ड की टीम दुबारा बल्लेबाजी (बैटिंग) करने मैदान में उतरी। लेकिन वे शास्त्री तथा अन्य गेंदबाजों के स्पिन आक्रमण के सामने अधिक रन नहीं बना सके। अंतिम दिन भारत ने फिर से बल्लेबाजी (बैटिंग) की। उसे मैच जीतने के लिए 225 रन बनाने थे। हमारे खिलाड़ियों ने अच्छी शुरूआत की। पर उनमें से कुछ मैदान में ज्यादा देर तक नहीं ठहर सके। मैच बराबरी की तरफ बढ़ रहा था। तीसरे पहर तक मैच में कोई दिलचस्पी नहीं रही थी।

लेकिन ईडन-गार्डन, कलकत्ता का यह मैच अभी अपने रोमांचक उतार-चढ़ाव के कारण मेरी स्मृति में सजीव है।

(iii) महँगाई_ एक समस्या

पिछले दो दशकों से महँगाई द्रौपदी के चीर की तरह निरंतर बढ़ती जा रही है। विभिन्न वस्तुओं के मूल्य में अप्रत्याशित वृद्धि को देखकर आश्चर्य होता है। निरंतर बढ़ती हुई महँगाई भारत जैसे विकासशील देश के लिए निश्चित ही भयानक अभिशाप कहा जा सकता है। निम्न वर्ग तथा मध्यम वर्ग के लोगों के साथ उच्च वर्ग के लोग भी महँगाई से त्रस्त हो उठे हैं। महँगाई का सबसे अधिक प्रभाव निम्न मध्य वर्ग पर हुआ है। इस वर्ग के लोग अपना सामाजिक स्तर भी बनाए रखना चाहते हैं तथा स्वयं को चक्रव्यूह में भी फँसा हुआ अनुभव करते हैं। अधिकांश वेतनभागी कर्मचारी इस कमरतोड़ महँगाई के समक्ष घुटने टेक बैठे हैं। महँगाई के विकराल दानव ने आज सम्पूर्ण भारतीय समाज को आर्तंकित कर दिया है। भारत में 90% लोग महँगाई के दुष्चक्र में फँसे हुए हैं।

देश के नेता बार-बार आश्वासन देते हैं कि महँगाई को रोकने के लिए कारगर उपाय किये जा रहे हैं, परन्तु नेताओं के आश्वासन पूर्णतः असफल सिद्ध हो रहे हैं। भारत एक निर्धन देश है। इस देश में मूल्यों का इस प्रकार बढ़ना निश्चय ही बहुत भयानक है। मूल्य वृद्धि के कारण जनता की क्रयशक्ति बहुत ही कम हो गई है।

बढ़ती हुई महँगाई का सर्वाधिक मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। पिछले 5० वर्षों में हमारे देश की जनसंख्या लगभग तीन गुनी हो गई है। जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात से विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, वैसे-वैसे विभिन्न वस्तुओं की माँग में वृद्धि होती है। माँग के अनुपात में यदि वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि नहीं होती, तो महँगाई का बढ़ना स्वाभाविक ही है।

हमारे देश में निरंतर बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार भी मूल्य वृद्धि का एक मुख्य कारण है। पुल, सड़कें और इमारतें बनने के कुछ समय बाद ही खण्डहर बन जाते हैं। इन्हें पुनः निर्मित कराने में पर्याप्त धनराशि व्यय होती है। निर्माणकर्त्ता सीमेंट के स्थान पर रेत का प्रयोग करते हैं। परिणाम यह होता है कि शासक को अपेक्षाकृत बहुत अधिक मात्रा में धन खर्च करना पड़ता है। प्राकृतिक आपदाएँ भी मूल्य-वृद्धि में एक सीमा तक सहायक हैं। हमारे देश में कभी सूखा पड़ जाता है, तो कभी विभिन्न नदियों में बाढ़ आ जाती है। बाढ़ हमारे लिए एक वार्षिक त्रासदी बन गई है। प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति बाढ़ की चपेट में आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तथा लाखों हेक्टेयर भूमि पर लहलहाती फसलें पानी में डूब जाती हैं। पिछले वर्ष की उड़ीसा में भयंकर समुद्री तूफान के कारण अरबें रुपये की फसल नष्ट हो गई।

महँगाई पर नियंत्रण पाने के लिए सरकार को कठोर कदम उठाने चाहिए तथा जनता को भी सादगीपूर्ण जीवन शैली में निष्ठा रखनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आवश्यक पदार्थों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होनी चाहिए।

(iv) भ्रष्टाचार

'भ्रष्टाचार' का शाब्दिक अर्थ है—गिरा हुआ व्यवहार। स्वार्थ और लोभ के कारण किया गया अमानवीय व्यवहार भ्रष्टाचार कहलाता है कुछ लोग घूस, मिलावट आदि गलत कार्यों को ही भ्रष्टाचार की संज्ञा देते हैं। परंतु यह भ्रामक धारण है। भ्रष्टाचार का दायरा बहुत बड़ा है। प्रधानमंत्री से लेकर चपरासी तक इसका फैलाव है। अगर प्रधानमंत्री अपनी कुर्सी के लिए लोगों में फूट डालता है, किसी विशेष वर्ग के प्रति पक्षपात और अन्य के प्रति उपेक्षा रखता है तो वह भ्रष्टाचारी है। अगर राजनीतिज्ञ वोट पाने के लिए समाज को गुमराह करता है, डॉक्टर अधिक धन के लालच में रोगी का ठीक उपचार नहीं करता, इंजीनियर ठेकेदारों से साँठ-गाँठ करके कमजोर पुल बनाता है; प्रोफेसर कक्षा में ठीक से न पढ़ाकर घर में ट्यूशनें पढ़ाता है, परीक्षक छात्रों को नकल करवाता है, विद्यार्थी नकल करके उत्तीर्ण होता है, व्यापारी मिलावट करता है या मनचाहे दाम लेता है या कम तोलता है, पुलिस का जवान अपराधी को नजरअंदाज करता है, दफ्तर का बाबू दफ्तर का काम समय पर न करके ओवरटाइम करता है, ऑफिसर रिश्वत लेता है, चपरासी सोया रहता है, सरकारी कर्मचारी ठीक पैसे वसूलने की बजाय बीच में पैसे खाता है तो यह सब भ्रष्ट आचरण हैं। यह अमानवीय व्यवहार है, क्योंकि इससे समाज का अहित होता है।

भारत में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है, जिसमें ईमानदारी से कार्य होता है। बच्चे के जन्म से प्रारंभ कीजिए। सरकारी अस्पतालों में गरीबों के लिए जगह नहीं होती जबकि अमीरों को शीघ्र दाखिल कर लिया जाता है। प्राइवेट डॉक्टरों की लंबी फीस ही उनके भ्रष्ट आचरण की कहानी कहती है। आज बाजार में नकली दवाइयों का बोलबाला है। कई बार इंजेक्शन की जगह दूषित पानी भरा रहता है, जो रोगी की जान लेकर छोड़ता है।

भारत में भ्रष्टाचार इसलिए पनपता है, क्योंकि यहाँ का नेता स्वयं भ्रष्ट हैं इसलिए वह भ्रष्ट लोगों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई नहीं करता। परिणामस्वरूप यह बुराई ऊपर से नीचे की ओर चलती चली जाती है। दूसरे, भूख, गरीबी और कुछ सामाजिक बुराइयाँ भी मनुष्य को भ्रष्ट करती हैं। दहेज जुटाने के लिए लड़की का पिता खुलेआम गलत कार्य करता है। तीसरे, यहाँ के आम आदमी के जीवन में कोई आदर्श नहीं रह गया है। चौथे, यहाँ की न्याय-प्रणाली भी भ्रष्टाचार की लपेट में आ गई है। पाँचवें, भारत का प्रेस अभी पूरी तरह सशक्त और जागरूक नहीं है।

भ्रष्टाचार तभी दूर हो सकता है, जबकि समाज के पास उसका पर्दाफाश करने का दृढ़ संकल्प हो। देश में सबसे शक्तिशाली होते हैं—युवा, यदि वे दृढ़ संकल्प कर लें कि भ्रष्टाचार को जड़मूल से उखाड़ फेंकेंगे तो उसका नामोनिशान नहीं रहेगा। परंतु फिर से प्रश्न यह है कि युवक कैसे संगठित हों और उनमें यह दृढ़ संकल्प कैसे जागे ? इसका सीधा-सा उपाय यह है कि भारत के शिक्षक, साहित्यकार, पत्रकार, कवि, कलाकार, एकजुट होकर देश के नवयुवकों में आचरण की शुद्धता के संस्कार भरें और भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दें। जब नैतिकता से संपन्न युवकों की टोली भ्रष्ट आचरण का समूल नष्ट करने ठान लेगी तो भ्रष्ट शासक हिल उठेंगे। सरकारी बाबुओं, चपरासियों व अफसरों की तो क्या बिसात, बड़े-बड़े धनी और राजनेता भी हाथ जोड़े शुद्ध आवरण करने लगेंगे।

(v) साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिकता एक मनोभाव है जो आदमी को विचार से संकुचित बनाता है। यह ऐसी भावना है जिससे आदमी की मूल्य समाप्त हो जाते हैं। मानवता के नाम पर यह दानवता की आवरण है। हमारे राष्ट्र के लिए तो यह ऐसी बीमारी है जो लाइलाज होती जा रही है। यह राष्ट्रीय एकता की जड़ को कमजोर करने वाली है। स्नेह, प्रेम और भ्रातृत्व से ऊँची है साम्प्रदायिकता।

किसी धार्मिक मतवाद या सम्प्रदाय के प्रति आग्रह जो सहिष्णुता को जन्म देता है, उसे साम्प्रदायिकता कहते हैं। ये ऐसी मनोभावना है जिसके प्रभाव से दूसरे धर्म को सहन करना संभव नहीं, बल्कि उसका मूलोच्छेद ही करना चाहता है। इस प्रकार हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि धर्मों से सम्बन्धित साम्प्रदायिकता हो सकती है।

साम्प्रदायिकता का जन्म हमारे देश में तब हुआ जब मुसलमान शासकों द्वारा जबर्दस्ती हिन्दू से मुसलमान बनाने का अभियान शुरू हुआ। इस्लाम को स्वीकार नहीं करने पर दीवार में चुनवाने तथा तलवार के घाट उतारने के कुकाण्ड के विरोध में हिन्दुओं में भी सनातन धर्म के प्रति आग्रह उत्पन्न हुआ। इससे हिन्दू और मुसलमान के बीच एक लम्बी खाई उत्पन्न हो गयी। इस साम्प्रदायिकता को अंग्रेजों ने और अधिक हवा दी। उसने तो धर्म के नाम पर और मुसलमानों के बीच फूट डालों और शासन करो की नीति अपनाकर अंग्रेजों ने भारत में साम्प्रदायिकता की भावना को हमेशा पल्लवित और पुष्पित किया। इसका भयानक परिणाम हुआ भारत का विभाजन।

साम्प्रदायिकता की आग में केवल हिन्दू और मुसलमान ही नहीं, सिख और अन्य धर्म के बीच भी आग फैली हुई है। पंजाब समस्या के पीछे साम्प्रदायिकता का सबसे अधिक जोर है।

साम्प्रदायिकता की बीमारी का इलाज हो सकता है। इसके लिए हमें आध्यात्मिक दृष्टि में परिवर्तन करना होगा। एक नयी आध्यात्मिकता को जन्म देना होगा। राजनीतिक लाभ उठानेवाले अगर अपनी बुरी नियत से बाज आयें तो बहुत कुछ सम्भव है कि उसका समाधान मिल जाय। चुनाव युद्ध में साम्प्रदायिकता के हथकण्डे से लड़नेवाले कुटिल राजनेता अपनी इंसानियत की राह अपना लें तो इनका समाधान हो सकता है। हमें शिक्षा को एक समान बनाना होगा। पूरे देश की शिक्षा समान होनी चाहिए। सामाजिक, धार्मिक और साम्प्रदायिक भावनाओं को स्वस्थ और वैज्ञानिक बनाना होगा। सरकार साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले संगठनों, संस्थानों, पत्रों को केवल रोके नहीं, बल्कि उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों को सजा दें। इससे बड़ी बात है कि हमें एक राष्ट्रीय जीवन दृष्टि पैदा करना चाहिए। जबतक संकीर्णता के समीप में हम पलते रहेंगे तबतक साम्प्रदायिकता की भावना बनी रहेगी। इसलिए हमें उदार और व्यापक जीवन दृष्टि से काम करना चाहिए।

(vi) सह-शिक्षा

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतांत्रिक देश में पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार होते हैं। शिक्षा के मामले में भी यह सही है। लड़कों और लड़कियों दोनों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। जब वे एक ही संस्था में एक साथ बैठते तथा पढ़ते हैं, तो इसे सह-शिक्षा कहा जाता है। इस प्रकार, सह-शिक्षा इस तरह की शिक्षा है, जहाँ लड़के और लड़कियों दोनों एक ही एक स्कूल या कॉलेज में एक साथ बैठते तथा पढ़ते हैं।

सह-शिक्षा में कुछ गुण और अवगुण होते हैं। यह लड़के तथा लड़कियों दोनों को एक साथ शांतिपूर्वक रहने का प्रशिक्षण देती है। सह-शिक्षा उनलोगों की क्षमता विकसित करती है। वे उन्हें समाज के लिए खुशहाल तथा उपयोगी बनाते हैं। वे अपने दाम्पत्य जीवन के पहले एक-दूसरे को समझते हैं। अपने देश के लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग विद्यालय या महाविद्यालय खोलना सम्भव नहीं है। इसके लिए हमें अधिक धन की आवश्यकता होगी। सह-शिक्षा इस समस्या का समाधान करती है। यह अधिक धन बचाती है। इस प्रकार, सह-शिक्षा के द्वारा धन, समय तथा ऊर्जा की बचत की जा सकती है।

लेकिन, सह-शिक्षा में कुछ अवगुण भी हैं। कुछ लोग इसे नापसन्द करते हैं। उनके अनुसार, सह-शिक्षा समाज के लिए हानिकारक है। उनकी परम्परागत धारणा इसके खिलाफ है। वे कहते हैं कि लड़कियाँ स्वभाव से शर्मीली होती हैं। इसलिए, वे लड़कों के विद्यालय या महाविद्यालय में पढ़ना नहीं चाहती है। इस पर एक महत्वपूर्ण विरोध भी है। जब लड़के और लड़कियाँ एक-दूसरे के करीब आते हैं, तो वे अपनी पुस्तकों की अपेक्षा एक-दूसरे पर ज्यादा ध्यान रखते हैं। वे एक-दूसरे को दोस्त बनाने में व्यस्त रहते हैं और वे स्वयं अपने को तथा अपने माता-पिता को धोखा देते हैं। इस प्रकार, वे अपना कीमती समय, धन और ऊर्जा बर्बाद करते हैं।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि सह-शिक्षा सामाजिक दृष्टिकोण से अच्छा है, क्योंकि ऐसे वातावरण में लड़के तथा लड़कियाँ एक-दूसरे को समझने का अवसर पाते हैं।

2. (क) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ जगदीशचन्द्र माथुर रचित 'ओ सदानीरा' शीर्षक यात्रा-संस्मरण से ली गयी है। इन पंक्तियों के माध्यम से चम्पारण की गौरवशाली भूमि का गुणगान किया गया है। चम्पारण की यह भूमि महान् है। यहाँ अनेक आक्रमणकारी तथा बाहरी व्यक्ति आए। उन्होंने या तो इस पावन भूमि को क्षति पहुँचाई या आकर बस गए। किन्तु धन्य है इसकी सहनशीलता एवं उदारता। इसने इन सबको भुला दिया, क्षमा कर दिया। ऐसे प्रतीत होता है कि इसने विस्मृत के हाथों अपनी बहुत से बड़ी निधियों को सौंप दिया। इसने किसी प्रकार का प्रतिकार नहीं किया। स्वयं को उन आततायियों के हाथों समर्पित कर दिया। उन्हें अपनी निधियों से समृद्ध किया।

(ख) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुख्यात कहानीकार श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी "उसने कहा था" शीर्षक से ली गई है। इन पंक्तियों में कहानीकार ने अमृतसर शहर के कोचवानों की बोलियों की प्रशंसा की है।

यहाँ कहानीकार के कथन का उद्देश्य यह है कि अमृतसर के इक्के-गाड़ी चलानेवालों की बोली बड़ी मीठी होती है। बड़े-बड़े शहरों में इक्के-गाड़ी वाले घोड़ों को भी जहाँ अश्लील गालियाँ दिया करते हैं तथा राहगीर से कड़ी भाषा में बोलते हैं, अमृतसर में वे कुछ इस ढंग से बोलते हैं कि राहगीर उनकी बातों से प्रभावित होकर बढ़ने के लिए रास्ता दे देते हैं। ऐसी बात नहीं कि रास्ते से नहीं हटनेवालों पर उन्हें चिढ़ नहीं होती है किन्तु वे मधुर-भाषा का ही प्रयोग करते हैं। उनकी जवान मीठी छूरी की तरह वार करती है। जैसे कोई बुढ़िया बार-बार चेतावनी देने पर भी रास्ते से नहीं हटती, तो वे मीठी बोली में कहते हैं—"हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमावालिये, हट जा पुता प्यारिए, बच जा लम्बी उमराँ बालिए"अर्थात् उस समय भी उनकी बोली की मिठास नहीं जाती है। वे मृदुभाषी होते हैं।

(ग) व्याख्या—प्रस्तुत पंक्तियाँ महाकवि तुलसीदास के 'विनय पत्रिका' से ली गयी है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि अपनी बात माता जानकी के माध्यम से अपने प्रभु ! श्रीरामचन्द्र जी तक पहुँचाना चाहते हैं। कवि अपनी बात पहुँचाने के क्रम में परिचय देता है कि हे प्रभु ! मैं बड़ा दीन हीन हूँ, निर्बल हूँ, परन्तु आपका दास हूँ। आपका कीर्तन-भजन करता हूँ। आपका ही नाम ले-ले कर अपना पेट भरता हूँ। हे प्रभु कृपा करके मेरी दशा पर विचार कीजिए क्योंकि मैं आपका ही भक्त आपकी शरण में हूँ। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ईश्वर की प्रतिष्ठा करता है कि जीवन जगत में जो कुछ हो रहा है सबका कारण मात्र यह ईश्वर श्रीराम हैं। कोई यदि निर्बल भी है, हीन भी है तो ईश्वर उसका दोष दूर करते हैं। अतः प्रभु को याद करना चाहिए। कवि की भाषा अवधी है। कवि ने बड़े मिठास के साथ शब्दों का संयोजन किया है।

(घ) व्याख्या—जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित यह पद्यांश छायावादी शैली का सबसे सुन्दर आत्मगान है। इसकी भाषा उच्च स्तर की है। इसमें संस्कृतनिष्ठ शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। यह गद्यांश सरल भाषा में न होकर सांकेतिक भाषा में प्रयुक्त है। प्रकृति का रोचक वर्णन इस पद्यांश में किया गया हैं इसमें रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। जैसे—विश्व-वन (वनरूपी विश्व)। इसमें अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। अनुप्रास अलंकार के कारण पद्यांश में अदभुत सौन्दर्य आ गया है। देखिए—

पवन की प्राचीन में रूक, जला जीवन जा रहा झुक।

3. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी
..... नगरपालिका,
..... नगर।

विषय—मच्छरों का बढ़ता हुआ प्रकोप।

महोदय,

मैं आपका ध्यान बढ़ते हुए मच्छरों के प्रकोप की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। मैं 'गोपाल नगर क्षेत्र' का निवासी हूँ। पूरे गोपाल नगर क्षेत्र में आजकल मच्छरों का भयंकर उत्पात छाया हुआ है। दिन हो या रात, मच्छरों के झुण्ड सदा घूमते नजर आ जाते हैं। रात को तो वे सोना दुर्लभ कर देते हैं। जब सुबह उठते हैं तो बच्चों के मुँह लाल-लाल दानों से भरे होते हैं। मच्छरों के कारण घर-घर में मलेरिया फैला हुआ है। प्रायः सभी घरों में कोई-न-कोई मलेरिया का रोगी मिल जाएगा। इन मच्छरों के कारण स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है।

हमारे क्षेत्र में मच्छरों की अधिकता का बड़ा कारण है—पानी के जमे हुए तालाब और गली-मुहल्लों में फैली चौड़ी-चौड़ी नंगी नालियाँ। उन कच्ची नालियों को व्यवस्थित करने की कोई व्यवस्था नहीं हुई है। मुहल्ले के जमादार सफाई की ओर ध्यान नहीं देते, इसलिए नालियों में सदा मल जमा पड़ा रहता है।

इस बार अत्यधिक वर्षा के कारण जगह-जगह जल का जमाव हो गया है। सब जगह कीचड़, मल और बदबूदार जल का प्रकोप हो गया है। अतः मैं पुनः गोपाल नगर के निवासियों की ओर से आपसे आग्रह प्रार्थना करता हूँ कि मच्छरों को समाप्त करने के लिए घरों में मच्छरनाशक दवाई छिड़कने की व्यवस्था की जाए। मलेरिया से बचने के लिए कुनीन बाँटने की व्यवस्था की जाए तथा पूरे क्षेत्र की सफाई के व्यापक प्रबन्ध किए जाएँ। आशा है आप शीघ्र कार्यवाही करेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय,
मंत्री, मुहल्ला सुधार समिति
गोपाल नगर

दिनांक : 19 जनवरी, 2024

अथवा,

सेवा में,
थानाध्यक्ष,
पुलिस स्टेशन,
गाँधी मैदान।

विषय—अपराधों की रोकथाम।

महोदय,

बड़े खेद के साथ आपको लिखना पड़ रहा है कि आजकल हमारे काशीडीह इलाके में अपराध की घटनाएँ बढ़ने लगी हैं। पिछले सप्ताह यहाँ भरी दोपहर को रिवाल्वर की नोक पर एक व्यापारी को लूट लिया गया था। आज कटरा नील में कुछ उचक्के कैशियर का कैश भरा बैग लेकर चम्पत हो गए। बाहर से आने वाले व्यापारियों की जेब साफ करना, दुकानों के बाजार से वाहन उठाना, माल की रेहड़ी गायब कर देना तो आम वारदातें हो गई हैं। आपसे प्रार्थना है कि इस इलाके की सुरक्षा-व्यवस्था को मजबूत करें। सिपाहियों की गश्त अधिक बढ़ाएँ। चाँदनी चौक के सभी व्यापारी इन वारदातों से बहुत अधिक चिन्तित है।

धन्यवाद।

प्रार्थी
महेश प्रसाद
अध्यक्ष, मार्किट कमेटी
साकंची।

4. (i) 'उसने कहा था' प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में लिखी गयी कहानी है। गुलेरीजी ने लहनासिंह और सुबेदारनी के माध्यम से मानवीय संबंधों का नया रूप प्रस्तुत किया है। लहना सिंह सुबेदारनी के अपने प्रति विश्वास से अभिभूत होता है, क्योंकि उस विश्वास की नींव में बचपन के संबंध है। सुबेदारनी का विश्वास ही लहना सिंह को उस महान् त्याग की प्रेरणा देता है।

कहानी एक और स्तर पर अपने को व्यक्त करती है। प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर यह एक अर्थ में युद्ध-विरोधी कहानी भी है क्योंकि लहना सिंह के बलिदान का उचित सम्मान किया जाना चाहिए था परन्तु उसका बलिदान व्यर्थ हो जाता है और लहना सिंह का करुण अंत युद्ध के विरुद्ध में खड़ा हो जाता है। लहना सिंह का कोई सपना पूरा नहीं होता।

(ii) जीवन में अनुभवों के उच्च शिखर पर विद्रोह का स्थान तय हुआ है। किसी-न-किसी रूप में अधिकांश व्यक्ति भयभीत रहता है। गहराई और

इसकी अद्‌भुत क्षमता का मनुष्य तभी एहसास कर पाता है जब वह प्रत्येक वस्तु के साथ विद्रोह करता है। संगठित धर्म के खिलाफ, परम्परा के खिलाफ और समाज के खिलाफ जब कोई विद्रोह करता है तो उसे वास्तविक जीवन के सत्य का साक्षात्कार होता है। विद्रोह से लक्ष्य की प्राप्ति होती है, समस्या का निराकरण होता है। अतः जीवन में विद्रोह का महत्वपूर्ण स्थान है।

(iii) डायरी हिन्दी साहित्य की वह विधा है, जिसमें व्यक्ति अपने मन की बातों को कागज पर उतारता है। वस्तुतः डायरी मन का कूड़ा है।

(iv) यह उक्ति संभवतः फ्रांस की एक महिला की है। जब वजीरा सिंह और उसके अन्य साथी उसके बंगले के बगीचे में जाते हैं तो वह महिला इन लोगों को फल, दूध तथा अन्य भोज्य पदार्थ बहुत प्रसन्न होकर देती है। इन पदार्थों का वह उनसे पैसे नहीं लेती है। उसे इस बात की खुशी है कि ये सैनिक इसके देश को जर्मन आक्रमणकारियों से रक्षा के लिए आये हुए हैं। इसलिए वह इन सैनिकों को अपना रक्षक मानकर इनका खूब आदर-सत्कार करती है।

(v) बुद्ध निवृत्तिमार्गी थे। उन्होंने घर-बार, राज-पाट, पत्नी-पुत्र को छोड़कर मुक्तिप्राप्ति हेतु संन्यास धारण कर लिया था। उनके अनुसार गृहस्थ जीवन मुक्ति-मार्ग में बाधक होता है। अनिच्छा से उन्होंने नारियों को भिक्षुणी बनने की अनुमति दी थी। एक दिन बुद्ध से थोड़ा पश्चाताप के साथ आयुष्मान आनंद से कहा कि "आनंद ! मैंने जो धर्म चलाया था, वह पाँच सहस्र वर्ष तक चलनेवाला था किन्तु अब वह केवल पाँच सौ वर्ष ही चलेगा, क्योंकि नारियों को मैंने भिक्षुणी होने का अधिकार दे दिया है।"

(vi) संत साहित्य में काम, क्रोध, मद, मोह और लोभ- इन पाँच अवगुणों को 'चौर' कहा गया है तथा मन अन्तरात्मा को कहा गया है।

(vii) पुत्र के लिए माँ निजी सुख-दुख भूल जाती है। उसे अपनी सुख-सुविधा के विषय में सोचने का अवकाश नहीं रहता। वह इसके स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का पूरा ध्यान रखती है। बेटा को ठंड न लग जाए अथवा बीमार न पड़ जाए इसके लिए उसे सदैव गोद में लेकर उसका मनोरंजन करती है। उसे लोरी-गीत सुनाकर सुलाती है। उसके लिए मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना करती है तथा मन्नतें माँगती है।

(viii) दानव दुरात्मा से कवि का अभिप्राय है कि यह अमानववादी दृष्टिकोण किसी भी महादेशीय बँधनों से बँधा नहीं होता है। यदि यह इन सबों से परे होता है। यह भौगोलिक, ऐतिहासिक सीमा को नहीं मानता है, अर्थात् सभी जगहों पर व्याप्त है। जिस प्रकार सभी जगहों पर मानवीय मूल्य एक समान होता है उसी प्रकार अमानवीय मूल्य भी सभी जगह एक समान हैं, उसके किसी प्रकार की हेर-फेर की गुंजाइश नहीं।

(ix) जयशंकर प्रसाद

(x) मलिक मुहम्मद जायसी

5. (i) जे० कृष्णमूर्त्ति मानते हैं कि शिक्षा मनुष्य का उन्नयन करती है। वह जीवन के सत्य, जीवन जीने के तरीके में मदद करती है। इस संदर्भ को देते हुए वे बताते हैं कि शिक्षक हों या विद्यार्थी उन्हें यह पूछना आवश्यक नहीं कि वे क्यों शिक्षित हो रहे हैं क्योंकि जीवन विलक्षण है। ये पक्षी ये फूल, ये वैभवशाली वृक्ष यह आसमान, ये सितारे ये सरिताएँ, ये मत्स्य यह सब हमारा जीवन है। जीवन समुदायों, जातियों और देशों का पारस्परिक सतत् संघर्ष है, जीवन ध्यान है जीवनधर्म भी है। जीवन गूढ़ है, जीवन मन की प्रच्छन्न वस्तुएँ- ईर्ष्याएँ महत्त्वाकांक्षाएँ, वासनाएँ, भय, सफलताएँ चिंताएँ। शिक्षा इन सबका अनावरण करती है। शिक्षा का कार्य है कि वह संपूर्ण जीवन प्रक्रिया को समझने में हमारी सहायता करे, न कि हमें केवल कुछ व्यवसाय या ऊँची नौकरी के योग्य बनाएँ। कृष्णमूर्त्ति कहते हैं कि हमें बचपन से ही ऐसे वातावरण में रहना चाहिए जहाँ भय का वास न हो नहीं तो व्यक्ति जीवन भर कुंठित हो जाता है। उसकी महत्वाकांक्षाएँ दब कर रह जाती है। मेधाशक्ति दब जाती है। मेधा शक्ति के बारे में कहते हैं कि मेधा वह शक्ति है जिससे आप भय और सिद्धांतों की अनुपस्थिति में आप स्वतंत्रता से सोचते हैं ताकि आप सत्य की, वास्तविकता की अपने लिए खोज कर सकें। पूरा विश्व इस भय से सहमा हुआ है। चूँकि यह दुनिया वकीलों, सिपाहियों और सैनिकों की दुनिया है। यहाँ प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी के विरोध में खड़ा है। किसी सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के लिए प्रतिष्ठा सम्मान शक्ति व आराम के लिए संघर्ष कर रहा है। अतः निर्विवाद रूप से शिक्षा का कार्य यह है कि वह इस आंतरिक और बाह्य भय का उच्छेदन करे।

(ii) जगदीशचंद्र माथुर 'ओ सदानीरा' शीर्षक निबंध के माध्यम से गंडक नदी को निमित बनाकर उसके किनारे की संस्कृति और जीवन प्रवाह की अंतरंग झाँकी पेश करते हैं जो स्वयं गंडक नदी की तरह प्रवाहित दिखलाई पड़ता है। सर्वप्रथम चंपारन क्षेत्र की प्राकृतिक वातावरण का वर्णन करते हुए उसकी एक-एक अंग का मनोहारी अंकन करते है। जैसे छायवादी कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण देखा जा सकता है उसी तरह निबंध में भी देखा जा सकता है। एक अंश देखिए—"बिहार के उत्तर-पश्चिम कोण के चंपारन इस क्षेत्र की भूमि पुरानी भी और नवीन भी। हिमालय की तलहटी में जंगलों की गोदी से उतारकर मानव मानो शैशव-सुलभ अंगों और मुस्कान वाली धरती को ठुमक-ठुमककर चलना सिखा रहा है।" इसके साथ माथुर संस्कृति के गर्त में जाकर नदियों में बाढ़ आना उन्हें लगता है जैसे उन्मत यौवना वीरांगना हो जो प्रचंड नर्तन कर रही हो। उन्हें साठ-बासठ की बाढ़ रामचरिमानस के क्रोधरूपी कैकयी की तरह दिखलाई पड़ती है। वे बताते हैं नदियों में बाढ़ आना मनुष्यों के उच्छृंखलता के कारण हैं। यदि महावन जो चंपारन से गंगा तट तक फैला हुआ था न कटता तो बाढ़ न आती। माथुर तर्क देते हैं कि वसुंधराभोगी मानव और धर्माधमानव एक ही सिक्के के दो पहलू है क्योंकि वसुंधरा भोगी मानव अपने भोग-विलास के लिए जंगलों की कटाई कर रहा है तो धर्मांध मानव पूजा-पाठ के सड़ी गली सामग्री को गंगा नदी में प्रवाहित कर उसे दूषित कर रहा है। माथुर मध्ययुगीन समाज की सच्चाई भी बताते हैं कि आक्रमण के कारण या अपनी महत्वाकांक्षा की तृप्ति के लिए मुसलमान शासकों ने अंधाधुंध जंगलों की कटाई की। इसी तरह यहाँ अनेक संस्कृति आये और वहीं रच-बस गये। सभी ने उसका दोहन ही किया। इस मिली-जुली संस्कृति का परिणाम कीमियों प्रक्रिया है। चंपारन के प्रत्येक स्थल पर प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग में गाँधी के चंपारन आने तक के पूरा इतिहास को अपने लेखनी के माध्यम से अच्छे-बुरे प्रभाव को खंगालते हैं। इस परिचय के संदर्भ में कहीं भी कला संस्कृति उसकी भाषा उनकी आँखों से ओझल नहीं हो पाती।

अंत में गंडक की महिमा का बखान करते हुए हैं कि ओ सदानीरा ! ओ चक्रा ! ओ नारायणी। ओ महागंडक ! युगों में दीन-हीन जनता इस विविध नामों से तुझे संबोधित करती रही है। आ तेरे पूजन के लिए जिस मंदिर की प्रतिष्ठा हो रही है, उसकी नींव बहुत गाढ़ी हैं। इसें तू ठुकरा न पाएगी।

(iii) जीवनी—शमशेर बहादुर सिंह का जन्म सन् 1911 में देहरादून (उत्तराखंड) में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा देहरादून में ही हुई। उन्होंने सन् 1933 में बी०ए० और सन् 1938 में एम०ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया। सन् 1935-36 में उन्होंने प्रसिद्ध चित्रकार उकील बंधुओं से चित्रकला का प्रशिक्षण लिया। सन् 1939 में **'रूपाभ'** पत्रिका के सहायक के रूप में काम किया। फिर कहानी, नया साहित्य, कम्यून, माया, नया पथ, मनोहर कलियाँ आदि कई पत्रिकाओं में संपादन-सहयोग दिया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के महत्वपूर्ण योजना के अंतर्गत उन्होंने सन् 1965-77 में **'उर्दू-हिन्दी कोश'** का संपादन किया। सन् 1981-1985 तक विक्रम विश्वविद्यालय (मध्य प्रदेश) के प्रेमचंद सृजनपीठ के अध्यक्ष रहे। सन् 1978 में उन्होंने सोवियत संघ की यात्रा की। सन् 1993 में इनका स्वर्गवास हो गया।

शमशेर बहादुर सिंह की काव्य कृतियों में प्रमुख हैं—कुछ कविताएँ, चुका भी नहीं हूँ मैं, इतने पास अपने, उदिता, बात बोलेगी, काल तुझसे होड़ है मेरी।

कविता का सारांश—'उषा' हिंदी साहित्य के नयी कविता के कवि शमशेर सिंह द्वारा रचित प्राकृति सौन्दर्यपरक कविता है। इस कविता में कवि ने सूर्योदय के पूर्व के उषाकालीन आकाशीय स्वरूप और सौन्दर्य का मोहक चित्रण किया है। कवि ने इसके चित्रण में भिन्न-भिन्न उपमानों की सहायता भी ली है।

सूर्योदय के पूर्व का काल उषाकाल कहलाता है। उस समय आकाश बिल्कुल नीला और स्वच्छ रहता है। उसकी नीलिमा के बीच आनेवाला उजाला

हल्के रूप में झाँकता-सा नजर आता है। प्रात:काल की उस वेला में आकाश नीले राख-सा लगता है। हल्के अंधकार के आवरण में ढँके रहने के कारण संपूर्ण आकाश राख से लीपे हुए गीले चौक के समान लगता है। फिर, धीरे-धीरे सूर्य की हल्की लालिमा की झलक उभरने लगती है। तब उसका स्वरूप कुछ बदल-सा जाता है और उस समय आकाश को देखकर ऐसा लगता है कि आकाश वह काली सिल हो जो जरा-सा लाल केसर से धुली हुई हो या वैसा स्लेट हो जिसपर लाल खड़िया चाक मल दी गई हो। अंत में कवि ने उषाकालीन आकाश के प्राकृतिक सौन्दर्य को प्रभावपूर्ण रूप से प्रस्तुत करने के लिए अंतिम उपमान लगाकर चर्चा करते हुए कहा है कि उस समय आकाश के वक्ष पर उषा कालीन दृश्य ऐसा लगता है मानो नीले जल में झिलमिलाती गोरी कोई काया खड़ी हो।

इसी परिवेश में सूर्योदय होता है। फिर सूर्य की किरणें विकीर्ण होनी लगती हैं और आकाश की गोद में चल रहा उषा का यह जादू और उसका नजारा सब समाप्त हो जाता है।

(iv) जीवनी—कविवर ज्ञानेंद्रपति का जन्म 1 जनवरी, 195० को पत्थर गामा, गोड्डा, झारखंड में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती सरला देवी तथा पिता जी का नाम श्री देवेन्द्र प्रसाद चौबे है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई। बी०ए० तथा एम०ए० (अंग्रेजी) की परीक्षा पटना विश्वविद्यालय से पास की। तत्पश्चात् हिन्दी विषय में एम०ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर से किया। अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् बिहार लोकसेवा आयोग द्वारा चयनित होकर कारा-अधीक्षक के पद पर पदस्थापित हुए। अपने कार्यकाल में उन्होंने कैदियों के लिए अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए। अन्तत: नौकरी छोड़कर पूर्णरूपेण कविता लेखन कार्य में लग गए। अपना निवास स्थान वाराणसी (उत्तर प्रदेश) को बनाया है।

रचनाएँ—उनका कविता संग्रह 'आँख हाथ बनते हुए' 1970 में प्रकाशित हुआ। सन् 1980 में "शब्द लिखने के लिए ही यह कागज बना है", का प्रकाशन हुआ। इसके अतिरिक्त गंगातट (2000), संशयात्मा (2004), भिनसार (2006), कवि ने कहा (2007) इनके अन्य कविता संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त गद्य लेखन में भी आपने अभिरूचि दिखाई। पढ़ते-गढ़ते, एकचक्रानगरी (काव्य नाटक) इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

कविता का सारांश—ज्ञानेन्द्रपति समकालीन कवि हैं। वे नवपूँजीवाद और आर्थिक उदारवादी के कारण ग्रामीण संस्कृति में जो बहुआयामी बदलाव आया है, जिससे संस्कृति को नष्ट हुआ देख दुखी होते हैं। उन्होंने जो बचपन के दिन गुजारे हैं वह स्मृतियों में बस जाता है। इसलिए वे गाँव का घर याद करते हैं। कवि घर के अंत:पुर की चौखट याद करता है वह देखता है कि घर के चौखट से पार होकर जैसे ही बाहर निकलता है तो बदलाव देखकर क्षुब्ध होता है। वह तरह-तरह के उपमाओं द्वारा कहता है कि जिस घर के भीतर खाँस कर आना पड़ता था अर्थात् घर नयी कन्याओं के आने पर बुजुर्ग लोग घर में प्रवेश करने से पहले खाँसते हैं, खड़ाऊ खटकाते हैं या रूककर पुकारते हैं यह सब नयी संस्कृति के प्रभाव से नष्ट हो रहा है। कवि अपनी इस परम्परा को खोना नहीं चाहता है। इसलिए गाँव का घर बराबर उसकी स्मृतियों में आते हैं। उस गाँव में जब भी कोई लड़ाई-झगड़ा होती थी तो लोग पंच परमेश्वर बनाकर उसका निदान करते थे परंतु अब अदालतों का चक्कर काटना पड़ता है। यही नहीं अब लालटेन का प्रकाश नहीं दिखता बल्कि बिजली आ गयी है। बेटे के विवाह के दहेज में टी०वी० माँगने लगे हैं। अब लोकगीतों की धुन कम सुनाई पड़ती है उसकी जगह मदमस्त आर्केस्ट्रा ने ले ली है। उस लोकसंस्कृति में कहाँ होरी-चेता विरहा-आल्हा गूँजते थे अब वह शोकगीत के समान लगता है। पहले सर्कस दिखाए जाते थे अब वह मानों कहीं खो गया है। गाँव की संस्कृति वैसी प्रतीत होती है जैसे हाथी का गजदंत नहीं हो। हाथी का सौन्दर्य उसके दाँत होते हैं। दाँत को बिछुड़ने पर वह दन्तविहीन हो जाता है उसी प्रकार गाँव का सौन्दर्य उसकी लोक संस्कृति है। वह उन्हीं गजदंतों के समान टूट गया। कवि शहर की चकाचौंध में देखता है कि लोग बीमारी के कारण अस्पतालों में और लड़ाई झगड़े के कारण अदालतों का चक्कर काट रहे हैं। गाँव के घर की रीढ़ इनसे काँप उठती है अर्थात ग्रामीण संस्कृति को चोट पहुँचता है।

(v) विद्यालय में लेखक के साथ बड़ी ही दारुण घटनाएँ घटती हैं। बाल सुलभ मन पर बीतने वाली हृदय विदारक घटनाएँ लेखक के मन:पटल पर आज भी अंकित हैं। विद्यालय में प्रवेश के प्रथम ही दिन हेडमास्टर बड़े बेदब आवाज में लेखक से उनका नाम पूछता है। फिर उनकी जाति का नाम लेकर तिरस्कृत करता है। हेडमास्टर लेखक को एक बालक नहीं समझकर उसे नीची जाति का कामगार समझता है और उससे शीशम के पेड़ की टहनियों का झाड़ू बनवाकर पूरे विद्यालय को साफ करवाता है। बालक की छोटी उम्र के बावजूद उससे बड़ा मैदान भी साफ करवाता है, जो काम चूहड़े जाति का होकर भी अभी तक उसने नहीं किया था। दुसरे दिन भी उससे हेडमास्टर वहीं काम करवाता है। तीसरे दिन जब लेखक कक्षा के कोने में बैठा होता है, तब हेडमोस्टर उस बाल लेखक की गर्दन दबोच लेता है तथा कक्षा से बाहर लाकर बरामदे में पटक देता है। उससे पुराने काम को करने के लिए कहा जाता है। लेखक के पिताजी अचानक देख लेते हैं। उन्हें यह सब करते हुए देख बेहद तकलीफ होती है और वे हेडमास्टर से बकझक कर लेते हैं।

(vi) रघुवीर सहाय द्वारा रचित "अधिनायक" शीर्षक कविता एक व्यंगात्मक कविता है। इस कविता में कवि ने सत्तापक्ष के जनप्रतिनिधियों को आधुनिक भारत के अधिनायक अर्थात् तानाशाह के रूप में चित्रित किया है। आज राष्ट्रीय गान के समय इन्हीं सत्ताधारियों का गुणगान किया जाता है। जब भी राष्ट्रीय त्योहारों पर 'जन-गण-मन-अधिनायक जय हे' का राष्ट्रीय गान गाया जाता है तो आम आदमी जो गरीब और लाचार है, जो फटेहाल जीवन बिता रहा है, इस राष्ट्रगीत का अर्थ नहीं समझता। वह उसी राजनेता को जनता का अधिनायक मानकर इस राष्ट्रगीत को गाता है। वह समझता है कि वह उन्हीं राजनेताओं का गुणगान कर रहा है।

कवि यह तर्क सही भी है। वास्तव में आज राष्ट्रगीत का महत्त्व राष्ट्रीयता से नहीं आँका जाता। कौन नेता कितना बड़ा बाहुबली है, कितना प्रभावशाली है उसी आधार पर उस राष्ट्रगीत के महत्व को आँका जाता है। कवि की यह सोच युक्तिसंगत और समसामयिक है। आज राष्ट्रगान की केवल खानापूर्ति होती है, देशभक्ति से इसका सम्बन्ध नहीं है।

6. (i) शीर्षक : युवाशक्ति

संक्षेपण—युवा शक्ति को आज दिशा प्रदान करने की जरूरत है। निश्चित दिशा एवं उद्देश्य के द्वारा ही जिम्मेवार नागरिक का निर्माण संभव है। कल का युग युवा शक्ति का होगा। **[कुल शब्द –85, संक्षेपित शब्द –30]**

(ii) शीर्षक : जीवन का उद्देश्य

संक्षेपण—उद्देश्यहीन मनुष्य का जीवन असफल होता है। कई तरह के उद्देश्यों में देश-सेवा का उद्देश्य उत्तम है। किसान अच्छी उपज नहीं कर पाते, इसलिए देश दरिद्र है। उन्हें योग्य और सफल किसान बनाने का उद्योग होना चाहिए। **[कुल शब्द –121, संक्षेपित शब्द –37]**

❑❑❑